

बदलता परिवेश – हमारी सृष्टि, हमारी दृष्टि

[अन्तर्राष्ट्रीय माहेश्वरी महाविधेयेशन, राजस्थान दिनांक 28.12.2007 में दिया गया
न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, पूर्व प्रधान न्यायाधीश, भारत का वक्तव्य]

विकास और उन्नति की प्रक्रिया सतत गतिमान रहती है। जाने-अनजाने, मुखर अथवा मौन एक प्रार्थना है जो ऊर्जावान मानवता का, सामर्थ्यवान प्रकृति और सदा परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश से तादात्म्य बैठाती है, प्रेरणा भी देती है, प्रोत्साहित भी करती है और शक्ति का अपव्यय रोकती है। छोटी सी प्रार्थना है चार पंक्ति की—

O' God!
Grant me **serenity**
to accept the things I can not change
Courage
to change the things I can
and the **Wisdom**
to know the difference

हे परमपिता परमेश्वर!
मुझे धैर्यजनित शान्ति (स्थित प्रज्ञता) दे
कि जो अपरिवर्तनीय है, अवश्यंभावी है
उसे मैं स्वीकार कर शिरोधार्य कर सकूँ।
साहस और शक्ति दे
कि जो बदल सकता है उसे बदल डालूँ।
और, ऐसी निर्मल विश्लेषक बुद्धि दे
कि इन दोनों में अन्तर जान सकूँ।

प्रार्थना की ये चार पंक्तियाँ मनुष्य का विवेक जाग्रत रखती हैं और उसकी ऊर्जा को दिशा देती हैं। जिस विषय पर हम आज चर्चा करने जा रहे हैं 'बदलता परिवेश—हमारी दृष्टि, हमारी सृष्टि' वह विषय चाहता है कि हम माता— प्रकृति, जिसकी गोद में आजीवन खेलते हैं, उसकी महत्ता को पहचानें और उससे प्रेम करना सीखें; समाज और सामाजिक परिवेश को समझें, परिवर्तन की प्रक्रिया के पार्थ बनें; और, अपनी दृष्टि को दिव्यता प्रदान करें ताकि हमें सृजन का श्रेय मिल सके।

आध्यात्म में दर्शाये चार आधारभूत तत्वों का समावेश इस प्रार्थना में है। स्वीकार, समर्पण, संघर्ष और सन्तुलन। स्वीकार – ‘तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे कांटों से भी प्यार’। समर्पण – प्रभू, मैं जैसा भी हूँ तेरा हूँ; तू मुझे जैसे रखना चाहे रख; ‘जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए’। संघर्ष – चुनौतियों से मैं कभी घबराऊँ नहीं; तेरे दिए हुए शरीर, मन और बुद्धि का प्रयोग तेरी शक्ति और सामर्थ्य के सहारे मानव मात्र के कल्याण के लिए करता रहूँ, पीछे नहीं हटूँ, मैं जानता हूँ कि मुझे एक दिन लौट कर तुझे जवाब देना है। सन्तुलन – तेरे संसाधनों का मैं उतना ही उपयोग करूँ जितना आवश्यक है और शेष संसाधनों का प्रयोग प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उपलब्ध कराने में साधन बनूँ, साधक बनूँ, बाधक नहीं।

आइए, एक छोटी सी यात्रा प्रारंभ करें—प्रकृति और पर्यावरण, विनाश और विकास, साधन और संसाधन और सामाजिक परिवेश के अभूतपूर्व परिवर्तन से साक्षात्कार की यात्रा। पहिले सृष्टि पर दृष्टि डालें, नेपथ्य से आ रही आवाज को सुनें, दीवार पर लिखी खतरों की इबारत को पढ़ें और तब चिंतन करें कि सृष्टि और समाज की सर्जना हमारे दृष्टिकोण में कौन सी रचना चाहती है और कौन सी वर्जना। प्रगति की दौड़ और सुख भोगने की होड़ में कहीं हम उस उद्देश्य से भटक तो नहीं रहे हैं जो भटकन पृथ्वी पर मानव की उपस्थिति और उपयोगिता पर ही प्रश्नचिन्ह लगा सकती है?

पर्यावरण / प्रदूषण

Nature has enough to meet our need but not our greed. अन्धाधुन्ध औद्योगीकरण, शहरीकरण और विलासिता के साधन जुटाने की होड़ में नैसर्गिक श्रोतों का क्षमता से अधिक दोहन हुआ है। जंगल मिट रहे हैं। पेड़, पौधों और जानवरों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। पृथ्वी पर उष्णता बढ़ती जा रही है जिसके भयावह और विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। विश्व के शुद्ध और पीने योग्य पानी का 70 प्रतिशत पानी ग्लेशियरों में सुरक्षित है। गंगा, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों को पानी हिमालय के ग्लेशियरों से मिलता है। हिमालय के ग्लेशियर वैश्विक ऊष्णता के कारण पिघल रहे हैं और प्रतिवर्ष उनकी ऊँचाई लगभग 23 मीटर घट

रही है। परिणाम! प्रत्येक वर्ष जुलाई से सितम्बर के बीच गंगा में बहने वाला पानी दो-तिहाई कम हो जाएगा। सिंचाई के लिए पानी में 37 प्रतिशत की कमी आ जाएगी। फलतः फसलों की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। (देखें—टाईम्स ऑफ इंडिया 03.04.2007)। एक वैज्ञानिक अनुमान के अनुसार इस सदी के अन्त तक गंगा सूख सकती है। ऊष्णता के कारण समुद्र के जल की ऊंचाई शनैः शनैः बढ़ रही है जिसके कारण तटवर्ती क्षेत्रों में प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो सकता है।

वायुमंडल में कार्बन की मात्रा बढ़ रही है। वह दिन दूर नहीं जब पीने के पानी की बोतल की तरह शुद्ध हवा के गुब्बारे भी खरीदने पड़ जायें या किसी किआस्क में जाकर थोड़ी देर शुद्ध वायु में श्वास लेकर फेफड़ों को ताकत देनी पड़े।

मानव प्रजाति के जीन्स में द्रुतगामी परिवर्तन हो रहा है। जीन्स के दृष्टिकोण से आज का मानव वह नहीं है जो 5000 वर्ष पूर्व था। अफ्रीकन मानव के जीन्स अब मलेरिया प्रतिरोधी हो गये हैं। यूरोपीय वयस्क मानव अब दूध ज्यादा आसानी से पचा सकता है। एशिया के मानव में एक नये जीन्स के कारण उसके कान अब सूखे रहने लगे हैं। (देखें – टाईम्स ग्लोबल, 12.12.2007)

केवल पंजाब में पिछले 5 वर्षों में कैंसर के रोगियों की संख्या तीन गुना हो गई है। कारण यह है कि हरित क्रान्ति के नाम पर ज़मीन में डाले जाने वाले रसायनिक उर्वरक, खाद्यान्न और फलों पर छिड़के जाने वाले कीटनाशक – इन दोनों का अनियंत्रित प्रयोग और भारी धातु उद्योगों का कचरा— इन तीनों के मिश्रण ने पानी को खतरनाक रूप से प्रदूषित कर दिया है। बच्चों के हाथ और अंगुलियों पर चकत्ते उभरने लगे हैं, खुजली होने लगी है, नाखून और बाल कमज़ोर हो रहे हैं। (देखें—टाईम्स ऑफ इंडिया, 17.12.2007)-

महिला उत्थान/ जागृति

एक ओर हम प्रकृति को पीड़ित करने में संलग्न हैं वहीं दूसरी ओर महिला-शक्ति, मातृ-शक्ति एक दैवी शक्ति के रूप में उभर रही है।

महिलाओं ने शिक्षा, व्यापार, उद्योग, राजनीति और ऐसे तमाम क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की है और अपनी दावेदारी जता कर अपनी गुणात्मक पहचान बनाई है जिसका स्वागत किया जाना चाहिये। महिलाओं की इस नवीन दावेदारी और भागीदारी से जहां महिलाओं ने अनेक चुनौतीपूर्ण उत्तरदायित्व ग्रहण करने शुरू कर दिये हैं वहीं सामाजिक, पारिवारिक और दाम्पतिक सम्बन्धों में नयी परिभाषाएं और नये मानदण्ड स्थापित होने लगे हैं। कहीं-कहीं असन्तुलन भी आ रहा है। यह संवेदनशील विषय है। इस परिवर्तन को न तो रोका जा सकता है और न ही रोका जाना चाहिए। किन्तु इस परिवर्तन से ताल-मेल बैठा लेने वाली सहजता का अवतरण करने के लिए कुछ चिन्तन चाहिए ताकि इस परिवर्तन का लाभ तो समाज को मिले किन्तु किसी प्रकार के प्रतिकूल परिणाम वर्तमान या आगामी पीढ़ी को न झेलने पड़ें।

भारतवर्ष में देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर एक महिला महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल आसीन हैं। अर्जेंटाइना में 15 दिन पहिले क्रिस्टीना फर्नांडिस क्रिचनर नामक महिला ने राष्ट्रपति के पद की शपथ ली है। राजस्थान जैसे विशाल प्रदेश की मुख्यमंत्री भी एक महिला हैं— श्रीमती वसुन्धरा राजे। वे लोकप्रिय होने के साथ-साथ इस प्रदेश को सक्षम, कुशल और निष्कलंक नेतृत्व दे रही हैं। भारतीय महिलाओं ने न केवल अपने देश में प्रगति की है बल्कि विदेशों में भी भारतीय महिलाओं के लिए अनुकरणीय कीर्तिमान स्थापित किए हैं। हाल ही में, 52 वर्षीया रेणु खटोर जो फरूखाबाद, उत्तर प्रदेश की रहने वाली है, ह्यूस्टन यूनीवर्सिटी की अगली प्रमुख घोषित की गई हैं। यूरोपीय आर्थिक जगत की सर्वाधिक सशक्त सौ महिलाओं में तीन महिलाएं भारतीय मूल की हैं: (1) 34 वर्षीया जूली चक्रवर्ती, स्विस् बैंकिंग कंपनी यू. वी. एस. की सबसे कम उम्र की मैनेजिंग डायरेक्टर और बोर्ड की सदस्य हैं; (2) रीता दत्ता, ब्रिटेन की प्रमुख फंड मैनेजिंग कंपनी, मॉर्ले फंड मैनेजमेंट में वैल्यू इनवैस्टमेंट प्रमुख हैं; (3) चन्दा कोचर, आई. सी. आई. सी. आई. बैंक की

जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर बनाई गई हैं और उनका अगला सी.ई.ओ. बनना लगभग तय है। केवल शिक्षा और आर्थिक मामलों में ही नहीं, ऐसे चुनौतीपूर्ण पदों पर जिन पर कि पुरुषों का एकाधिकार रहा है, महिलाओं ने जबरदस्त प्रवेश लिया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में किरण बेदी ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। दिनांक 22.12.2007 के टाइम्स ऑफ इंडिया में करीम नगर की श्रीमती सौम्या मिश्रा पर एक आलेख प्रकाशित हुआ है। वे ऐसे क्षेत्र में पुलिस अधीक्षक के रूप में पुलिस को नेतृत्व दे रही हैं जो नक्सल प्रभावित है। उन्हें श्रेय है कि उन्होंने अनेक नक्सलवादियों का आत्म समर्पण कराया और नक्सलवादियों को जन जीवन की सामान्य धारा से जोड़ने के लिए महती प्रयास किए हैं। आतंकवाद का पर्याय रह चुके अनेकों व्यक्तियों को पुनःस्थापित किया है। एक खतरनाक आतंकवादी की पुत्री को उन्होंने स्वयं गोद लिया है और उसका पालन-पोषण कर रही हैं। वे 1994 के बैच की आई. पी. एस. अधिकारी हैं।

शिक्षा और खेल, दोनों ही क्षेत्रों में प्रावीण्य सूची में लड़कियों का नाम प्रमुखता से आता है, यह सर्व विदित है। एक या डेढ़ साल हुआ मुझे बेंगलोर में एक कार्यक्रम में जाने का अवसर मिला था। वहां बातचीत में मुझे बताया गया कि सिर्फ बेंगलोर की 1500 लड़कियां विदेशों में उच्चशिक्षा प्राप्त कर रही हैं। मेडिकल साइंस और इंजीनियरिंग में आज लड़कियों की भागीदारी लगभग 50 प्रतिशत है।

सामाजिक / पारिवारिक

पारिवारिक जीवन पर कुछ प्रतिकूल प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहे हैं। 'हेल्पएज' नामक स्वयं-सेवी संस्था द्वारा किए गए सर्वेक्षण से पता चला है कि महानगरों में आठ में से एक बुजुर्ग सर्वथा परित्यक्त है और उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। 75 वर्ष की आयु से अधिक के बुजुर्गों में 21 प्रतिशत एकाकी जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिनमें अधिक संख्या महिलाओं की, और उनमें से भी विधवाओं की है। 41 प्रतिशत बुजुर्ग अकेले रह गए हैं अर्थात् उनके जीवनसाथी-पति या पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। 88 प्रतिशत बुजुर्ग यह कहते हैं कि उनका एकमात्र रोग उनका एकाकीपन है। संयुक्त परिवार की जीवन पद्धति लगभग समाप्त हो गई है और

न्यूक्लियर फैमिलीज़ की संख्या बढ़ रही है। विशेषज्ञों का मत है कि अधिक से अधिक वृद्धाश्रम बनाए जाने चाहिए ताकि बजुर्ग अपने समयस्कों के बीच सुरक्षित एवम् सामाजिक जीवन व्यतीत कर सकें। (टाईम्स ऑफ इंडिया, 26.11.2007)

तेज गति से बढ़ते औद्योगिकरण तथा शहरों अथवा विदेशी रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों के कारण युवा आयु में युवक—युवतियां (विवाहित अथवा अविवाहित) अपने स्थायी निवास और विशेषकर कस्बों और ग्रामों से पलायन कर रहे हैं। वे बुजुर्गों को घर की देखभाल करने के लिए पीछे छोड़ देते हैं और बच्चों को या तो होस्टल में रख देते हैं या बजुर्गों के पास देखभाल के लिए छोड़ जाते हैं। नवदम्पतियों में यह रुझान देखने में आ रहा है कि वे बच्चों का होना वे अपनी व्यावस्थायिक प्रगति में बाधक मानते हैं इसलिए या तो बच्चे नहीं चाहते या संतानोत्पादन को जितना हो सके विलंबित करते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षित वर्ग में जन्मदर की कमी आई है और आज की युवा पीढ़ी और बच्चों के बीच आयु का अन्तर घातक रूप से बढ़ रहा है।

मनोरंजन के अत्याधुनिक साधनों विशेषकर दूरदर्शन ने परिवार के सदस्यों को एकसाथ बिताने के लिए समय का अभाव कर दिया है। युवा दम्पति अपने बड़ों से, बच्चों से, पासपड़ोस और समाज से भी कट रहे हैं। इनसे उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों से होने वाली घटनाएं संकेत देती हैं। महानगरों में एकाकी बुजुर्ग दम्पतियों के साथ आपराधिक घटनाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।

विवाह की संस्था (Institution of Marriage) शिथिल हो रही है। प्रमुख कारण है विवाह में विलम्ब होना। शिक्षा के अवसर बढ़ रहे हैं। पढ़ाई पूरी करते—करते 26—27 से लेकर 30 वर्ष की उम्र हो जाती है। उसके उपरान्त युवक—युवतियों को रोजगार की तलाश और अर्थोपार्जन पहली प्राथमिकता होती है जिसे वे विवाह से अधिक महत्त्व देते हैं। यह आवश्यकता भी है, विवशता भी। हमारी मान्यताओं के अनुसार विवाह न तो सौदा है और न समझौता। यह एक संस्कार है। परन्तु विवाह होते—होते समझने—समझाने, सामंजस्य बैठाने और अपने आपको बदलने—ढालने की उम्र निकल चुकी होती है, विचारों में दृढ़ता आ जाती है, लचीलापन लगभग जा

चुका होता है। फलस्वरूप, एक मोटे अनुमान के अनुसार, 50 प्रतिशत विवाह या तो असफल हो रहे हैं या समस्या ग्रस्त हैं। इसके नकारात्मक परिणाम हैं— परिवार के स्तर पर हताशा, निराशा, एकाकीपन और नन्हें—मुन्ने निर्दोष बच्चों को सहना पड़ रहा है परित्यक्तता, असहायता और उपेक्षा का दण्ड। पीड़ित बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

बच्चों में बढ़ती हिंसक/आपराधिक प्रवृत्ति

समाचार पत्रों के सुविज्ञ पाठक वह समाचार भूले नहीं होंगे कि लगभग सात महीने पहले अमेरिका की वर्जीनिया टेक यूनिवर्सिटी में एक कोरियाई विद्यार्थी ने अन्धाधुंध गोली चलाकर अपने 32 सहपाठियों को मार डाला था। इसी माह के प्रारंभ में लास वेगास में तीन बच्चों ने स्कूल के बस स्टॉप पर पिस्तौल से गोली मारकर 6 बच्चों को ज़ख्मी कर दिया। विवाद की जड़ में कोई लड़की बताई जाती है। ऐसी घटनाएं केवल विदेश में घटित हुई हों ऐसा नहीं है। केवल दिसम्बर महीने में घटित हुई कुछ घटनाएं देखिए। गुड़गांव के ही एक क्षेत्र में कक्षा आठ, दस और बारह में पढ़ने वाले कुछ टीनऐजर्स विद्यार्थियों ने खिलौना पिस्तौल और चाकू की मदद से एक कार के ड्राइवर को धमकाया और उसे अपने काबू में करके कार को लेकर भाग गये। 11 दिसम्बर को गुड़गांव के इंटरनेशनल स्कूल के आठवी क्लास में पढ़ने वाले दो बच्चों ने अपने ही एक सहपाठी की गोली मारकर हत्या कर दी। इन बच्चों का कहना है कि मृतक बच्चा स्कूल में उनके साथ मारपीट और दादागिरी करता था। अहमदाबाद में एक 17 वर्षीय बालक की उसके सहपाठी ने उसके गले में अपनी कोहनी घुसा कर हत्या कर दी। ऐसा करके उसने अपनी उस सनक को पूरा किया जो उसके मन में दूरदर्शन पर डब्ल्यू. डब्ल्यू. ई. कार्यक्रम देखकर उपजी थी।

बच्चों में बढ़ती हुई आपराधिक मनोवृत्ति की ये घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि उनके दिलों में नफरत और हिंसा की आग भड़क रही है। समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने इन घटनाओं पर जो टिप्पणियां की हैं वे हम सभी को एक बोधक पाठ के रूप में पढ़ना चाहिए। बच्चों की दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। पर इस बात से माता—पिता और शिक्षक अनजान हैं। संयुक्त परिवारों के विघटन और

न्यूक्लियर फैमिली के बढ़ते चलन का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव अबोध बच्चों पर पड़ा है जो एकाकी हो गए हैं। परिवारों और स्कूलों के वातावरण में नैतिक शिक्षा का अभाव है। नई पीढ़ी होनहार और बुद्धि प्रधान है। हमारे पास बच्चों पर नज़र रखने के लिए समय हो या न हो पर आज के बच्चे वयस्कों और वयस्कों की दुनिया पर गहरी नज़र रखते हैं। इंटरनेट के कारण, वयस्कों की दुनिया बच्चों की पहुंच के बाहर नहीं रही है। मनोरंजन के नाम पर बच्चे अजनबियों से चैट करते हैं, विडियोगेम्स की मारामारी और मारधाड़ वाले टी.वी प्रोग्राम्स देखते हैं। अब तो बच्चों के लिए बनने वाली कॉमिक्स और एनीमेशन फिल्मों में भी मारधाड़ और सैक्स का समावेश हो गया है। एक वाक्य में कहा जाए तो बच्चे वक्त से पहले युवा हो रहे हैं। यह मात्र कटाक्ष नहीं है बल्कि एक डरावने सत्य से साक्षात्कार है। बच्चों में व्याप्त हिंसक और आपराधिक प्रवृत्तियां उस नये भारत की देन हैं जिसमें शान शौकत, सरलता से कमाया गया नया पैसा, तेज भागती जिंदगी और शहरीकरण के बीच शानदार रहन-सहन जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों का सर्वथा अवमूल्यन हो चुका है, जीवनशैली के अंग बन चुके हैं। हर माता-पिता अपने बच्चे को गहन प्रतियोगिता में भाग लेकर ऊपर उठते हुए देखना चाहते हैं किन्तु इस प्रक्रिया में बच्चे के साथ सहयोग करने के लिए उनके पास समय नहीं है। सम्पन्न माता-पिता के पास बच्चों पर खर्च करने के लिए अन्धाधुन्ध पैसा है पर समय नहीं है। तथाकथित अच्छे स्कूल में भेजकर माता-पिता बच्चे के प्रति अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। बच्चा उजले कपड़ों में या मॉडर्न यूनीफॉर्म में छिपे हुए शरीर के अन्दर एक एकाकी, विचलित, परित्यक्त और मानसिक रूप से शिथिल व्यक्तित्व सहेजता रहता है जो कभी भी आक्रामक हो जाता है। आर्थिक समृद्धि में भारत को अमेरिका होने में समय लगेगा किन्तु बच्चों की दुनिया में भारत अमेरिका बनने की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

बच्चों को लेकर हमारे सामने दूसरी चुनौती उनका खानपान है। दिल्ली में हाल में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार हर पांच में से एक बच्चा 'ओवरवेट' है। 70 प्रतिशत संभावना है कि यह बच्चा बड़ा होकर मोटापे और मधुमेह (डाइबिटीज) से पीड़ित होगा। ये बच्चे 'जंक फूड' पसन्द करते हैं। कक्षा 3-4-5 के 1155 बच्चों के

अध्ययन से पता चला है कि उनमें से 39 प्रतिशत बर्गर खाना पसन्द करते हैं, 31 प्रतिशत पिज्जा खाते हैं। फलों में केवल 11 प्रतिशत की रुचि है। बर्गर और पिज्जा के साथ उन्हें शीतल पेय (कोल्ड ड्रिंक) चाहिए। 44 प्रतिशत बच्चे शीतल पेय पीते हैं। इनमें से किसी भी वस्तु में पोषक तत्व नहीं होते, केवल स्वाद होता है। बच्चे को तैयार 'चीज' मिलती है और माता-पिता को पकाने की 'परेशानी' से छुटकारा। खानपान की प्रवृत्ति के पोषक या उत्तरदायी हैं—भौतिक सुख की चाह, माता-पिता का लाड़-प्यार, विज्ञापन और वातावरण। शीघ्र ही भारतवर्ष मोटापे के रोग के लिए विश्व का शीर्षस्थ देश होगा। (टाईम्स ऑफ इंडिया, 11.11.2007 / 26.11.2007)

अशांत मानव

आदमी अशांत है। कानून व्यवस्था बनाने वाली एजेन्सियां शिथिल और संवेदना शून्य हैं। न्याय मंहगा है विलम्ब से मिलता है। सड़क पर दुर्घटना के मामलों में, लोग खुद ही चालक और वाहन को सजा देने लगे हैं। इस बढ़ती प्रवृत्ति को समाचार पत्र 'रोडरेज' का नाम दे रहे हैं। कॉलोनियों में संदिग्ध व्यक्ति पकड़ में आ जाए तो लोग उसे खुद ही निबटा देते हैं। लोगों में न्याय के प्रति अविश्वास और हिंसा की वृत्ति बढ़ी है और बढ़ रही है। अनेक निर्दोष व्यक्ति इस हिंसा और उन्माद के शिकार हो रहे हैं।

शिक्षा का स्तर

भारत में नई पीढ़ी के बीच शिक्षा के प्रति रुझान एक विस्फोट के रूप में बढ़ा है। हमारे देश में शिक्षा के उन्नत एवं आधुनिक संस्थान न होने के कारण अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए हजारों की संख्या में बच्चे प्रतिवर्ष बाहर चले जाते हैं विशेषकर अमेरिका, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया में। एक अनुमान के अनुसार लगभग दो लाख बच्चे विदेशों में शिक्षा ले रहे हैं। वे सब अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न हैं। वे वहीं बस जाते हैं। इसकी दो हानियां हैं। एक तो हमारे देश से प्रतिभा का पलायन (ब्रेन ड्रेन)। दूसरे, हमारी युवा पीढ़ी हमारे सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित न होकर पाश्चात्यता के रंग में

रंग रही है जिससे भारतीयता का अवमूल्यन हो रहा है। यह हमारे देश की सांस्कृतिक क्षति है।

मुझे यह कहते हुए खेद होता है कि भारत में जिसे हम शिक्षण संस्थाओं का प्रसार समझ रहे हैं वह वास्तव में शिक्षा के नाम पर खुल रहे व्यापारिक संस्थानों का प्रसार है। विशेषज्ञ यह मानते हैं कि हमारे देश के वे विद्यालय और महाविद्यालय जो श्रेष्ठ कहलाते हैं उनका स्तर सामान्य से नीचे है। गतवर्ष एक पर्यवेक्षण किया गया जिसमें बेंगलोर, चेन्नई, कलकत्ता, मुम्बई और दिल्ली के 142 इंग्लिश मिडियम स्कूलों में कक्षा 4, 6 और 8 में पढ़ने वाले 32,000 विद्यार्थी परीक्षण के दायरे में लिये गए। उन्होंने वे उत्तर तो दिए जो वे पढ़कर अथवा याद करके दे सकते थे किन्तु किसी भी विषय को विश्लेषित करने और मौलिक चिन्तन द्वारा उत्तर देने की क्षमता का विकास उनमें नहीं हुआ था। भाषा और गणित विषयों की जांच में हमारे विद्यार्थी अन्तर्राष्ट्रीय मानकों से बहुत नीचे निकले। 2007 की टाइम्स 'हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग' में हमारे देश का एक भी शिक्षण संस्थान प्रथम 200 की सूची में नहीं आ सका जबकि जापान के 11, चीन के 6 और हाँगकाँग के चार विश्वविद्यालय इस सूची में हैं। हाँगकाँग की आबादी मुम्बई की आबादी से आधी है। सेंटर फॉर लर्निंग रिसोर्सिस पुणे के डायरेक्टर श्री जॉन कूरीयन का कहना है कि हमें चाहिए कि बच्चों को कैलकुलेटर देने की बजाय उन्हें पहाड़े और गणना के सूत्र (जैसे पहाड़े) सिखायें। बच्चों को कविताएं और भाषण याद करने और लिखने व कहने की शक्ति विकसित करनी चाहिए। (टाइम्स ऑफ इंडिया, 17.12.2007)। सैनेगल में जारी ग्लोबल कैम्पेन फॉर एजुकेशन की रिपोर्ट में यूनीवर्सल बेसिक एजुकेशन के लिए भारत को 'C+' ग्रेड मिला है। भारत में आज भी 5 में से केवल 3 व्यक्ति शिक्षित हैं (नवभारत टाइम्स, 16.12.2007)

असमान आर्थिक सम्पन्नता

एक ओर शिक्षा की और जनजीवन की यह स्थिति है दूसरी ओर हमारा देश धन कुबेरों का देश होता जा रहा है। देश के सकल घरेलु उत्पाद (जी.डी.पी.) में आईटी

व सर्विस सैक्टर का योगदान 50 प्रतिशत पार कर चुका है। हमारे देश की इन्फोसिस, एच.सी.एल., विप्रो जैसी कंपनियां माइक्रोसोफ्ट को टक्कर दे रही हैं। भारत बिजनेस डाटा प्रोसेसिंग (बी.पी.ओ.) का एशिया में हब बन गया है। जहां उद्यमी अरबपति बन रहे हैं, युवा प्रोफेशनल्स की सैलरी लाखों और करोड़ों में पहुंच रही है। भारत का एक बड़ा तबका गरीबी में फंसा हुआ है। इस के बावजूद भी, इकोनोमिक सैक्टर में आ रहे बदलाव इस बात का स्पष्ट संकेत दे रहे हैं कि भारत कुछ ही सालों में एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरेगा। स्वाभाविक है कि रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। सबसे सुनहरा संकेत यह है कि भारत में करोड़पति वह नहीं बन रहा है जो धनी है बल्कि वह बन रहा है जिसके पास टैलेंट है, कुछ करने का ज़ुबान है, दूर दृष्टि है और कड़ी मेहनत से कल्पनाओं को साकार करने की चाह है। ये आंकड़े इकॉनोमी सैक्टर में नवभारत के निर्माण की शुरुआत के साक्ष्य कहे जा सकते हैं। तेज गति से बढ़ रहे देशों में भारत चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। दुनिया के अर्थशास्त्री कहते हैं कि 2050 तक भारत की राष्ट्रीय आय अमेरिका की राष्ट्रीय आय को पीछे छोड़ देगी।

किन्तु इन अच्छी ख़बरों के पीछे छिपी कड़वी सच्चाईयों को दृष्टि ओझल नहीं किया जा सकता। कॉरपोरेट खेती, अनुबन्धीय खेती, और मंहगे बीजों द्वारा कंपनियां किसानों का शोषण कर रही हैं। अमीरी शहरी क्षेत्रों में बढ़ रही है। जो कृषि भारत में रोजगार का 65 प्रतिशत उपलब्ध कराती है उसका हिस्सा राष्ट्रीय आय में केवल 19 प्रतिशत रह गया है। स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पानी की बढ़ती कीमतें सामान्य जन को गरीब बनाती जा रही है। हाल में प्रकाशित एक स्वयं सेवी सर्वेक्षण के अनुसार आज भी भारत में 77 प्रतिशत जनसंख्या मात्र 20 रुपये प्रतिदिन पर गुजारा करती है। (नभाटा, 04.11.2007)

हम क्या कर सकते हैं और कैसे?

पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक परिवेश, विशेषकर महिलाओं, बच्चों और आने वाली पीढ़ी के दृष्टिकोण से, नये भारत का एक विहंगम चित्र आपके सामने प्रस्तुत करने का मैंने प्रयास किया है। इसमें न तो प्रशंसा का भाव है और न ही आलोचना

अथवा निन्दा का। यह केवल एक दर्पण है जिसमें वास्तविकता का प्रतिबिम्ब झलकता है। हमने उन चुनौतियों की चर्चा की है जो वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक धरातल पर हमारे सामने उपस्थित हैं। हम क्या कर सकते हैं इस दिशा में चिन्तन के लिए आधारभूत जानकारी से हमारा परिचय होता है। जो हमारी उपलब्धियां हैं उन पर यदि गर्व की नहीं तो संतोष की अनुभूति तो अवश्य ही कर सकते हैं। जो हम नहीं कर पाएं हैं या जो किया जा सकता है वह करने का संकल्प ले सकते हैं।

एक प्रासंगिक छोटी सी घटना है। जापान की एक जूता बनाने वाली कंपनी ने अपने एक प्रतिनिधि को अफ्रीका के एक द्वीप पर भेजा। वहां के आदिवासी नंगे पैर रहते थे, जूते नहीं पहनते थे। प्रतिनिधि ने कंपनी को अपना प्रतिवेदन प्रेषित किया— 'इस द्वीप पर व्यापार की कोई संभावना नहीं है, यहां के लोग जूते पहनते ही नहीं हैं।' कंपनी ने अपना एक और प्रतिनिधि उसी द्वीप पर भेजा। उसने प्रतिवेदन प्रेषित किया— 'इस द्वीप पर व्यापार की भरपूर संभावना है। हमारे लिये यह सबसे बड़ा बाज़ार है। यहां की शत प्रतिशत आबादी हमारे जूते खरीदने के लिए संभावित ग्राहक है। सिर्फ यहां के लोगों को जूता पहनना सिखाना होगा।'

हमारा देश अपरिमित संभावनाओं का देश है। यहां न तो संसाधनों की कमी है और न मानव शक्ति का अभाव है। भारतवासी स्वभाव से श्रमशील और चरित्रवान है। इसे शिक्षित और संस्कारपोषित करने की आवश्यकता है। साथ ही जो खतरे मंडरा रहे हैं उनके प्रति हमारी वर्तमान और नई पीढ़ी को परिचित कराकर उनमें प्रतिरोध की क्षमता जाग्रत करने की आवश्यकता है। हमारा दृष्टिकोण बदलना चाहिए और निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए। कुछ सूत्र आपके विचारार्थ प्रस्तुत हैं। समाज के धरातल पर और समाज के सामूहिक नेतृत्व में राष्ट्र के निर्माण के लिए हम क्या और कैसे कर सकते हैं?

समाधान

समाधान के लिए चिन्ता नहीं चिन्तन करने की आवश्यकता है। इन तीन दिनों हम सब चिन्तन और विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। समाधान खोजेंगे, मिलेगा भी। कुछ सुझाव आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

1. आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनें, सामाजिक और वैयक्तिक धरातल पर

हम स्वतंत्र देश के नागरिक हैं। स्वतंत्रता वहीं सुदृढ़ होती है जहां के नागरिक यह नहीं पूछते कि देश मेरे लिए क्या कर सकता है? वे पूछते हैं कि मैं देश के लिए क्या कर सकता हूँ? प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए शासन का मुंह देखने की प्रवृत्ति से हम जितनी जल्दी मुक्ति पा लें अच्छा है। 'सुशासन' की मंजिल 'स्वशासन' से ही मिलेगी।

'सोशल रिसपान्सिबिलिटी ऑफ कॉर्पोरेट सैक्टर' को समझने और कार्यरूप में परिवर्तित करने का यह सुनहरा अवसर है। समाज के प्रत्येक औद्योगिक और व्यापारिक घराने को चाहिए कि (i) वह कोई शिक्षण संस्था स्थापित करे, अथवा (ii) कोई पारिमार्थिक (चैरिटेबल) या लोक कल्याणकारी योजना का प्रारंभ करे (iii) उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां या सुगम ऋण दे। शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में बिरला परिवार का योगदान उल्लेखनीय और अभिनन्दनीय है। न्यूनतम यह तो किया ही जा सकता है कि किसी सुस्थापित लोक सेवी संस्था से जुड़कर उसे सहायता और सहारा देकर सशक्त बनाएं। ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं। यह काम 'आम के आम, गुठली के दाम' की तरह हैं। ज्ञान का प्रसार होगा, नई पीढ़ी स्वावलम्बी बनेगी, प्रतिभा का पलायन रुकेगा और भारत को पुनः विश्वगुरु का सम्मान दिलाने की दिशा में एक ठोस कदम होगा। कम्पनी को टैक्स में छूट मिलेगी।

2. शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ें

विद्या के दान से बढ़कर कोई दान नहीं है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में लिखा है:

विद्या जड़ों में भी सहज ही डालती चैतन्य है,

हीरा बनाती कोयले को, धन्य विद्या धन्य है।

एक शिक्षा शास्त्री ने कहा है कि यदि हम आज शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी बदलाव ला सकें तो उसके सुपरिणाम हमें 20 वर्ष बाद देखने को मिल सकेंगे और उस युग की शुरुआत हो सकेगी जिसमें भारत 'सशक्त भारत' होगा, विश्व का सिरमौर होगा।

हमारे अध्यक्ष श्री रामपालजी सोनीजी एक ऐसे आदर्श उद्योगपति हैं जो भीलवाड़ा में अपने उद्योग—व्यापार के सहयोग से उत्कृष्ट शिक्षण संस्थानों का संचालन कर रहे हैं। वे अनेक छात्रवृत्तियां देते हैं, विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता देते हैं और जो करते हैं उसका उल्लेख भी नहीं करते हैं। अपने कार्यकाल के प्रारम्भ में ही उन्होंने घोषणा की है कि वे शिक्षा के प्रचार—प्रसार को अपने अध्यक्षकाल में विशेष महत्त्व और प्राथमिकता देंगे। साथ ही उनका संकल्प है कि यदि कोई भी स्थानीय माहेश्वरी समाज अपने क्षेत्र में किसी शिक्षण संस्था की स्थापना करना चाहे या छात्रावास बनाना चाहे तो वे ऐसी योजना को मूर्त रूप कर साकार कराने में पूरा—पूरा सहयोग देंगे। समाज को चाहिए कि श्री सोनीजी के कार्यकाल में शिक्षा एवं शिक्षण—संस्थाओं सम्बन्धी परियोजनाओं को महत्त्व एवं प्राथमिकता दें।

जनवरी 2005 में सूरत सम्मेलन में मैंने माहेश्वरी विश्वविद्यालय की स्थापना का आह्वान किया था। समाज के बन्धुओं में बहुत उत्साह जाग्रत हुआ था। किशनगंज (अजमेर) के श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी ने मुझे पत्र द्वारा सूचित किया है कि विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु 7 से 8 करोड़ की राशि या तो प्राप्त हो चुकी है या आश्वस्त है। मेरे विचार में एक अच्छे विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए 100 एकड़ भूमि और 100 करोड़ रुपया न्यूनतम चाहिए।

यह कन्वेन्शन यदि इस दिशा में कोई ठोस कदम उठा सके और माहेश्वरी विश्वविद्यालय की स्थापना के स्वप्न को आकार दे सके तो मैं समझूंगा कि यह कन्वेन्शन सार्थक हुआ।

माहेश्वरी समाज जिस विश्वविद्यालय या शिक्षण संस्था की स्थापना करे उस संस्था से मेरी कुछ अपेक्षाएँ हैं:

- (i) स्थापना माहेश्वरी समाज करे किन्तु संस्था की सेवाएँ माहेश्वरी समाज तक ही सीमित नहीं होंगी। देश के प्रत्येक नागरिक को गुणवत्ता (मेरिट) के आधार पर संस्था की सेवाओं का लाभ उठाने का अधिकार होगा। आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोगों को शिक्षण सुविधा देने की व्यवस्था भी इन संस्थाओं में रहे।
- (ii) माहेश्वरी शिक्षण संस्था, सामान्य शिक्षण संस्था नहीं होगी। शिक्षा का स्तर अति उत्कृष्ट होगा जो अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर न केवल खरा उतरे बल्कि श्रेष्ठ हो। हम विदेश के श्रेष्ठतम शिक्षण संस्थानों से सम्पर्क बना कर सहयोग प्राप्त करें।
- (iii) स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, डॉ. ज़ाकिर हुसैन और ऐसे अनेक महापुरुष एकमत हैं कि जो शिक्षा विद्यार्थी को चरित्रवान और व्यक्तित्व को चहुंमुखी विकसित नहीं बना सकती वह शिक्षा व्यर्थ है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए आत्मनिर्भर बनाना तो है पर यह एकमात्र उद्देश्य नहीं है। अस्तु माहेश्वरी शिक्षण संस्था विद्यार्थियों में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना पर विशेष ज़ोर दे।
- (iv) माहेश्वरी शिक्षण संस्था विद्या के जगत में अनुकरणीय आदर्श बने ऐसा 'रोल मॉडल' कि अन्य शिक्षण संस्थाएँ उसकी अनुकृति बनने का प्रयास करें।

- (v) माहेश्वरी शिक्षण संस्था की स्थिति (लोकेशन), प्रबन्धन, शिक्षण और क्रियाकलाप श्रेष्ठतम हों। Everything at its best and of the top. सिनेजगत के सबसे बड़े शो-मैन राजकपूर की यही विशेषता थी वे अपनी फिल्म के लिए जिसे भी चुनते थे-कहानी लेखक, कलाकार, संगीतकार, पार्श्वगायक आदि-वह अपने क्षेत्र का श्रेष्ठतम होता था इसीलिए उनकी हर फिल्म यादगार और अनूठी बन सकी।
- (vi) संस्कार, संस्कृति और संस्कृत-हमारे पाठ्यक्रम के अनिवार्य अंग हों। संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है और ज्ञान का अथाह भण्डार अपने में संजोये है। विश्व के विकसित देश हमारे संस्कृत के ग्रन्थों में निहित ज्ञान पर शोध कर रहे हैं। स्वर-साम्राज्ञी लता मंगेशकर ने अपनी सफलता का श्रेय उनके संस्कृत ज्ञान को दिया है। यह भाषा अपने भीतर संस्कारों की शिक्षा के मंत्र भी छिपाये हुए है। नई पीढ़ी में नैतिक मूल्यों के अभाव का बड़ा कारण उनका ऐसी संस्थाओं में शिक्षण प्राप्त करना है जहां संस्कृत की शिक्षा नहीं दी जाती या संस्कृत का अनादर होता है।

3. सामाजिक और पारिवारिक जीवन में आदर्शों का पुनःस्थापन

समाज की बालिकाओं और युवतियों ने अपनी प्रतिभा, शक्ति और चुनौतियां झेलने की साहसिकता का परिचय दिया है। वे तेज गति से आगे बढ़कर समाज में अपना स्थान बना रही हैं और पुरुषों के कंधे से कंधा मिला रही हैं। इस दैवी शक्ति के जागरण का स्वागत भी किया जाना चाहिए, और सम्मान भी। पुरुषों को चाहिए कि नारी की प्रगति को अपने एकाधिकार अथवा वर्चस्व में अतिक्रमण न मानें बल्कि सामंजस्य बैठाने का प्रयास करें। अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि मैं यह कहूं कि पुरुषों को कुछ सीमा तक घर गृहस्थी और कामकाज की ज़िम्मेदारियां बांटने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए जोकि पारंपरिक रूप से महिलाओं की रही हैं। दोनों ही पक्षों को

अपनी सोच बदलनी होगी। युवकों को अपना नज़रिया उदार करना चाहिए वहीं युवतियों को भी बहुत जल्दबाज़ी या अधीरता से काम नहीं लेना चाहिए। पुरुष-स्त्री के सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्धों में बदलाव का यह संक्रमण काल (transition period) है। जिसमें जागरूकता, धैर्य और सावधानी की आवश्यकता है।

4. परिवार में सदभाव एवं स्थायित्व बनाए रखने के लिए कुछ सूत्र हैं:-

- (i) परिवार के सदस्य, चाहे जितने भी व्यस्त हों, दिन में कम से कम एक बार अवश्य मिलें व साथ बैठें। यह समय देव-पूजा का, भोजन का अथवा चाय का कोई भी हो सकता है।
- (ii) सप्ताह में एक दिन अवकाश का ऐसा रखें जिसमें कोई काम न किया जाए, केवल साथ समय बिताया जाए। घर के बाहर भी जाया जा सकता है। पारिवारिक मित्रों के यहां जाकर उनके परिवार के सदस्यों से मिलना भी इस दिन हो सकता है।
- (iii) छोटे बच्चे प्रतिदिन बड़ों को प्रणाम कर आशीर्वाद लें। यात्रा पर जाने व लौटने के समय सभी बड़ों को प्रणाम करना अच्छी परम्परा है।
- (iv) विवाद न करें। मतैक्य न हो तो विषय पर परस्पर बैठकर शान्त आवाज़ में व खुले दिमाग से बातचीत कर लेना उचित है।
- (v) घर में केवल उत्तम पुस्तकों का प्रवेश होने दें। रामायण, गीता और श्रीमद्भागवत घर में अवश्य रखें।
- (vi) दूरदर्शन घर के बीच सामान्य कमरे (जनरल रूम) में रखें। दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखने का समय सीमित रहे।

- (vii) कम्प्यूटर भी कॉमन रूम में रखें। बच्चे इन्टरनेट के द्वारा क्या देख रहे हैं इस पर नज़र रखें।
- (viii) बच्चों के सोने व जागने का समय उचित हो। देर रात तक न जागें।
- (ix) बच्चों को देर रात तक मित्रों के घर या अन्य स्थान पर घर से बाहर न जाने दें। मूवी देखने के लिए बच्चों के साथ जाएं।
- (x) बच्चों के लिए समय निकालें। वे क्या चाहते हैं, समझें। जो कहना चाहते हैं, सुने। स्कूल व खेल के मैदान में उन्होंने क्या किया यह सुनाने के लिए उन्हें अवसर दें।
- (xi) बच्चों को खर्च करने के लिए अनावश्यक पैसे न दें। जो भी पैसे दें उसका हिसाब उनसे अवश्य लें। हिसाब रखना उनकी आदत में आयेगा और वे अपव्यय या अनुचित व्यय नहीं करेंगे।
- (xii) बच्चों को बच्चों की तरह बढ़ने दें। उन्हें आपकी सम्पन्नता का अहसास न होने दें।

संत प्रवर सुधांशुजी महाराज कहते हैं कि वह घर स्वर्ग समान है जिसमें—

- ❖ एकता की शक्ति हो
- ❖ ईश्वर की भक्ति हो
- ❖ दुर्भावों से विरक्ति हो
- ❖ गुरु वचनों में अनुरक्ति हो

गुरुवचनों का अर्थ है जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत और आदर्श। इनका श्रोत हैं सत्संग और स्वाध्याय।

5. समाज के लिए योगदान

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह सामाजिक उत्थान की परियोजनाओं और लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए अपनी आय का एक निश्चित प्रतिशत पृथक् रखे। अपने बेशकीमती समय में से कुछ समय अपने हाथों से सेवा के कार्य करने के लिए भी निकालें।

6. भारतीय जीवन मूल्यों की पुनःस्थापना

हम में से प्रत्येक यह संकल्प ले कि वह वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर उन जीवन मूल्यों को पुनःस्थापित करने का प्रयास करेगा जो हमारे अपने हैं पर जिनका ह्रास हो चुका है या हो रहा है। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के अध्यक्ष डॉ. धर्मपाल मैनी के अनुसार, भारतीय जीवन मूल्यों के निम्न आधार हो सकते हैं:

- ❖ जीवन के प्रति आस्था और लगाव
- ❖ विवकेशील चिन्तन
- ❖ परिवेश—बोध
- ❖ लोक कल्याण की चेतना, और
- ❖ वैयक्तिक उदात्तीकरण अथवा आन्तरिक उन्नयन

7. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन/ सम्पर्क

वैश्वीकरण के इस युग में जबकि सारा विश्व एक बड़े कस्बे में बदल रहा है, भौगोलिक सीमायें क्षीण हो रही हैं, कोई भी समाज केवल देश या प्रदेश के स्तर पर सिमट कर विकसित नहीं हो सकता। चुनौतियां वैश्विक हैं, समाधान भी वैश्विक खोजने होंगे। मानवता को जाति या छोटे समाजों के आधार पर बांटने का मैं पक्षधर नहीं हूँ किन्तु प्रत्येक समाज मानवता मात्र की छोटी इकाई है। समाज के स्तर पर किए गए सेवा और उत्थान के प्रकल्पों में

सफलता और प्राप्त प्रशिक्षण वह कौशल्य और आत्म विश्वास जगा देता है जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इन्हीं कार्यों को करने के लिए चाहिए।

उपसंहार

श्री सुधाशु महाराज के शब्दों में वह जीवन निरर्थक है जिसमें—

- ❖ प्रेम का प्रवाह न हो
- ❖ उन्नति की चाह न हो
- ❖ आध्यात्म की राह न हो
- ❖ दूसरों की परवाह न हो

कुछ पाने के लिए संघर्ष करना होता है। वर्तमान समय प्रतियोगिता का युग है। लक्ष्य निर्धारित करना और उसे पाने के लिए साधन, सामर्थ्य और शक्ति समर्पित करना सफलता के लिए अनिवार्य हैं। मार्ग में बाधाएं तो आती हैं किन्तु यदि इरादे नेक हों, संकल्प सुदृढ़ हों और इच्छा शक्ति प्रबल हो तो मार्ग में आने वाले पत्थर बाधाएं नहीं, सीढ़ियां बन जाया करते हैं। इन दो पंक्तियों के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूं कि—

अब हवाएं ही करेंगी रौशनी का फैसला,
जिस दीये में जान होगी वह दीया रह जाएगा।

.....